ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 123-125**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

पश्चिमी देशों के रक्षा क्षेत्रों में तनाव से वैश्विक आर्थिक संकटः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ0 विशाल कुमार श्रीवास्तव
असिस्टेंट प्रोफेसर– रक्षा एवं सामरिक अध्ययन विभाग, डी0 ए0 वी0 पी0जी0 कालेज, कानपुर (उ0प्र0) भारत

Received-30.04.2026, Revised-08.05.2026, Accepted-15.05.2026, **E-mail:vksdav1@gmail.com**

सारांशः ***वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में आर्थिक विकास, अंतरराष्ट्रीय व्यापार तथा सुरक्षा व्यवस्था एक–दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। पश्चिमी देशों के रक्षा क्षेत्रों में बढ़ते तनाव, सैन्य प्रतिस्पर्धा, भू–राजनीतिक संघर्ष तथा सामरिक प्रतिद्वंद्विता का प्रभाव केवल सुरक्षा क्षेत्र तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह वैश्विक अर्थव्यवस्था को भी व्यापक रूप से प्रभावित करता है। विशेष रूप से रूस–यूक्रेन संघर्ष, नाटो के विस्तार, अमेरिका–चीन रणनीतिक प्रतिस्पर्धा तथा यूरोप में बढ़ते रक्षा व्यय ने वैश्विक आर्थिक अस्थिरता को जन्म दिया है। इसके परिणामस्वरूप ऊर्जा संकट, आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान, मुद्रास्फीति, निवेश में कमी तथा वैश्विक व्यापार में अनिश्चितता बढ़ी है। रक्षा क्षेत्र में तनाव के कारण देशों का सार्वजनिक व्यय सामाजिक विकास की अपेक्षा सैन्य आवश्यकताओं पर अधिक केंद्रित हो जाता है, जिससे आर्थिक विकास की गति प्रभावित होती है। प्रस्तुत लेख में पश्चिमी देशों के रक्षा क्षेत्रों में उत्पन्न तनाव तथा उसके वैश्विक आर्थिक संकट पर पड़ने वाले प्रभावों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है।***

कुंजीभूत शब्द– वैश्विक आर्थिक संकट, वैश्विक व्यवस्था, आर्थिक विकास,अंतरराष्ट्रीय व्यापार, सुरक्षा व्यवस्था, सैन्य प्रतिस्पर्धा,आतंकवाद।

प्रस्तावना– द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात विश्व व्यवस्था में शांति, सहयोग तथा आर्थिक विकास को प्राथमिकता दी गई थी। किंतु शीत युद्ध की समाप्ति के बाद भी वैश्विक स्तर पर सैन्य प्रतिस्पर्धा पूरी तरह समाप्त नहीं हुई। 21वीं शताब्दी में आतंकवाद, क्षेत्रीय संघर्ष, सामरिक प्रतिस्पर्धा तथा संसाधनों पर नियंत्रण की राजनीति ने रक्षा क्षेत्र को पुनः वैश्विक विमर्श का प्रमुख विषय बना दिया है।

पश्चिमी देशों, विशेष रूप से अमेरिका और यूरोपीय देशों ने अपनी सुरक्षा रणनीतियों को सुदृढ़ करने के लिए रक्षा बजट में लगातार वृद्धि की है। रूस–यूक्रेन युद्ध के बाद यूरोप में सुरक्षा संबंधी चिंताएँ बढ़ीं, जिसके परिणामस्वरूप रक्षा व्यय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इसी प्रकार अमेरिका और चीन के मध्य इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने वैश्विक सामरिक तनाव को बढ़ाया है, वही देखा जाय तो खाडी देश ईरान के साथ भी अमेरिका का तेल क्षेत्र में बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने वैश्विक सामरिक तनाव को और अधिक तनावग्रस्त किया है, जिससे पूरे विश्व में ईधन क्षेत्र में हाहाकार मचा दिया है।

इन परिस्थितियों का प्रभाव केवल सैन्य क्षेत्र तक सीमित नहीं है। वैश्विक वित्तीय बाजार, ऊर्जा आपूर्ति, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, विदेशी निवेश तथा उत्पादन प्रणाली भी इन तनावों से प्रभावित होती है। इसलिए रक्षा क्षेत्र में तनाव और आर्थिक संकट के बीच संबंधों का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक है।

रक्षा क्षेत्रीय तनाव की अवधारणा– रक्षा क्षेत्रीय तनाव से आशय उन परिस्थितियों से है जिनमें दो या अधिक देशों के बीच सुरक्षा, सीमा, संसाधन, सैन्य शक्ति अथवा भू–राजनीतिक हितों को लेकर प्रतिस्पर्धा या संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है। इसके प्रमुख आयाम हैं:

- सैन्य प्रतिस्पर्धा।
- हथियारों की दौड़।
- रणनीतिक गठबंधन।
- सीमा विवाद।
- आर्थिक प्रतिबंध।
- साइबर युद्ध और तकनीकी प्रतिस्पर्धा।

जब ये तनाव बढ़ते हैं, तब वैश्विक आर्थिक गतिविधियाँ भी प्रभावित होने लगती हैं।

पश्चिमी देशों में रक्षा तनाव के प्रमुख कारण–

1. रूस–यूक्रेन संघर्षः रूस और यूक्रेन के बीच संघर्ष ने यूरोप की सुरक्षा व्यवस्था को चुनौती दी। इस संघर्ष के कारण ऊर्जा आपूर्ति, खाद्यान्न व्यापार तथा वैश्विक वित्तीय बाजारों में अस्थिरता उत्पन्न हुई।

2. नाटो का विस्तारः North Atlantic Treaty Organization (NATO) के विस्तार को रूस अपनी सुरक्षा के लिए चुनौती मानता है। इससे यूरोप में सामरिक तनाव बढ़ा और रक्षा व्यय में वृद्धि हुई।

3. अमेरिका–चीन रणनीतिक प्रतिस्पर्धाः United States और China के बीच तकनीकी, आर्थिक और सैन्य प्रतिस्पर्धा ने वैश्विक अनिश्चितता को बढ़ाया है।

4. ऊर्जा सुरक्षाः ऊर्जा संसाधनों पर नियंत्रण और ऊर्जा आपूर्ति की सुरक्षा भी पश्चिमी देशों की रक्षा नीतियों का महत्वपूर्ण भाग बन चुकी है।

5. साइबर सुरक्षा चुनौतियाँः डिजिटल युग में साइबर हमले राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा बन गए हैं। इसके कारण रक्षा बजट में साइबर सुरक्षा संबंधी व्यय लगातार बढ़ रहा है।

रक्षा तनाव और वैश्विक आर्थिक संकट का संबंध– आर्थिक विकास के लिए स्थिरता और विश्वास आवश्यक है। जब रक्षा क्षेत्र में तनाव बढ़ता है, तब निवेशक, उद्योग तथा व्यापारिक संस्थाएँ अनिश्चितता का सामना करती हैं। रक्षा तनाव निम्नलिखित माध्यमों से आर्थिक संकट को जन्म देता है:

- ऊर्जा कीमतों में वृद्धि।
- वैश्विक व्यापार में बाधा।
- विदेशी निवेश में कमी।
- मुद्रास्फीति में वृद्धि।
- सार्वजनिक ऋण का विस्तार।

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

- उत्पादन लागत में वृद्धि।

इस प्रकार रक्षा तनाव वैश्विक आर्थिक गतिविधियों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों से प्रभावित करता है।

ऊर्जा संकट और आर्थिक प्रभाव– आधुनिक अर्थव्यवस्था ऊर्जा पर आधारित है। यूरोप लंबे समय तक रूसी गैस और तेल पर निर्भर रहा है। रक्षा तनाव बढ़ने पर ऊर्जा आपूर्ति बाधित होती है। ऊर्जा कीमतों में वृद्धि के परिणामस्वरूपः

- औद्योगिक उत्पादन महँगा हो जाता है।
- परिवहन लागत बढ़ती है।
- खाद्य पदार्थों की कीमतों में वृद्धि होती है।
- मुद्रास्फीति बढ़ती है।
- ऊर्जा संकट का प्रभाव विकसित और विकासशील दोनों देशों पर पड़ता है।

वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला पर प्रभाव– वैश्विक अर्थव्यवस्था आज परस्पर जुड़ी हुई आपूर्ति श्रृंखलाओं पर निर्भर है। रक्षा तनाव और युद्ध की स्थिति मेंः

- समुद्री परिवहन बाधित होता है।
- निर्यात–आयात प्रभावित होता है।
- उत्पादन लागत बढ़ती है।
- वस्तुओं की उपलब्धता कम होती है।

रूस–यूक्रेन संघर्ष के दौरान गेहूँ, उर्वरक, तेल और गैस की आपूर्ति प्रभावित हुई, जिससे अनेक देशों की अर्थव्यवस्थाओं पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

मुद्रास्फीति और आर्थिक अस्थिरता– रक्षा तनाव के कारण वस्तुओं और सेवाओं की लागत बढ़ती है। जब उत्पादन लागत बढ़ती है तो उपभोक्ता कीमतों में भी वृद्धि होती है। मुद्रास्फीति के प्रमुख प्रभावः

- क्रय शक्ति में कमी।
- बचत का अवमूल्यन।
- निवेश में गिरावट।
- आर्थिक विकास में मंदी।

कई देशों में रक्षा तनाव के कारण केंद्रीय बैंकों को ब्याज दरें बढ़ानी पड़ीं, जिससे आर्थिक गतिविधियाँ और प्रभावित हुईं।

रक्षा व्यय और आर्थिक विकास– पश्चिमी देशों ने हाल के वर्षों में रक्षा बजट में उल्लेखनीय वृद्धि की है।

रक्षा व्यय के सकारात्मक पक्षः

- रक्षा उद्योग का विकास।
- तकनीकी नवाचार।
- रोजगार सृजन।

नकारात्मक पक्षः

- शिक्षा और स्वास्थ्य पर व्यय में कमी।
- सार्वजनिक ऋण में वृद्धि।
- सामाजिक कल्याण योजनाओं पर दबाव।
- आर्थिक संसाधनों का असंतुलित उपयोग।

अत्यधिक सैन्य व्यय दीर्घकाल में आर्थिक विकास की गति को प्रभावित कर सकता है।

वैश्विक वित्तीय बाजारों पर प्रभाव– रक्षा क्षेत्र में तनाव बढ़ने पर निवेशकों में अनिश्चितता बढ़ती है। इसके परिणामस्वरूपः

- शेयर बाजारों में गिरावट।
- पूँजी प्रवाह में कमी।
- मुद्रा विनिमय दरों में अस्थिरता।
- सुरक्षित निवेशों की ओर झुकाव।

वित्तीय बाजारों की यह अस्थिरता वैश्विक आर्थिक संकट को और गहरा कर सकती है।

विकासशील देशों पर प्रभाव– रक्षा तनाव का सबसे अधिक प्रभाव विकासशील देशों पर पड़ता है, क्योंकि उनकी अर्थव्यवस्थाएँ वैश्विक बाजारों और आयातित ऊर्जा पर निर्भर होती हैं। मुख्य प्रभावः

- खाद्य संकट।
- ऊर्जा आयात लागत में वृद्धि।
- विदेशी निवेश में कमी।
- सार्वजनिक ऋण में वृद्धि।
- गरीबी और बेरोजगारी में वृद्धि।

अनेक विकासशील देशों को सामाजिक कल्याण और आर्थिक विकास कार्यक्रमों के लिए आवश्यक संसाधन जुटाने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

भारत पर प्रभाव– भारत प्रत्यक्ष रूप से पश्चिमी देशों के रक्षा तनाव का पक्षकार नहीं है, किंतु वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ा होने के कारण प्रभावित होता है। मुख्य प्रभावः

- कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि।
- उर्वरकों की लागत में वृद्धि।
- निर्यात–आयात पर प्रभाव।
- मुद्रास्फीति का दबाव।
- विदेशी निवेश में उतार–चढ़ाव।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

साथ ही भारत के लिए कुछ अवसर भी उत्पन्न हुए हैं, जैसेः

- रक्षा विनिर्माण का विस्तार।
- ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण।
- वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में नई भूमिका।

वैश्विक आर्थिक संकट की चुनौतियाँ–

1. बढ़ती मुद्रास्फीतिः ऊर्जा और खाद्य कीमतों में वृद्धि वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए गंभीर चुनौती है।

2. ऋण संकटः अनेक देशों का सार्वजनिक ऋण तेजी से बढ़ रहा है।

3. व्यापारिक संरक्षणवादः रक्षा तनाव के कारण देश अपने घरेलू उद्योगों को संरक्षण देने की नीति अपनाने लगते हैं।

4. तकनीकी विभाजनः अमेरिका और चीन के बीच तकनीकी प्रतिस्पर्धा वैश्विक नवाचार प्रणाली को प्रभावित कर सकती है।

5. खाद्य एवं ऊर्जा सुरक्षाः भविष्य में खाद्य और ऊर्जा संसाधनों की उपलब्धता एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी रहेगी।

संभावित समाधान–

- अंतरराष्ट्रीय संवाद और कूटनीति को बढ़ावा दिया जाए।
- ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण किया जाए।
- वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं को अधिक लचीला बनाया जाए।
- रक्षा व्यय और सामाजिक विकास के बीच संतुलन स्थापित किया जाए।
- बहुपक्षीय संस्थाओं की भूमिका को सुदृढ़ किया जाए।
- हरित ऊर्जा और सतत विकास को प्राथमिकता दी जाए।
- आर्थिक प्रतिबंधों के स्थान पर सहयोगात्मक उपायों को बढ़ावा दिया जाए।

निष्कर्ष– पश्चिमी देशों के रक्षा क्षेत्रों में बढ़ते तनाव ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को नई चुनौतियों के सामने खड़ा कर दिया है। सैन्य प्रतिस्पर्धा, भू–राजनीतिक संघर्ष, ऊर्जा संकट तथा आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान के कारण विश्व अर्थव्यवस्था में अस्थिरता बढ़ी है। इन परिस्थितियों ने मुद्रास्फीति, निवेश में कमी, व्यापारिक अनिश्चितता तथा आर्थिक विकास की मंदी जैसी समस्याओं के साथ ईधन का लॉकडाउन जैसे हालात को जन्म दिया है।

यद्यपि रक्षा क्षेत्र राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए आवश्यक है, परंतु अत्यधिक सैन्य प्रतिस्पर्धा दीर्घकाल में आर्थिक संसाधनों पर दबाव डालती है। इसलिए विश्व समुदाय के लिए यह आवश्यक है कि वह सुरक्षा और आर्थिक विकास के बीच संतुलन स्थापित करे। अंतरराष्ट्रीय सहयोग, कूटनीतिक समाधान तथा सतत विकास आधारित नीतियाँ ही वैश्विक आर्थिक संकट को कम करने में प्रभावी सिद्ध हो सकती हैं।

अंततः यह कहा जा सकता है कि रक्षा क्षेत्र में तनाव केवल राजनीतिक या सैन्य चुनौती नहीं है, बल्कि यह वैश्विक आर्थिक स्थिरता, सामाजिक विकास और मानव कल्याण से भी गहराई से जुड़ा हुआ विषय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. International Monetary Fund (IMF), World Economic Outlook Reports.
2. World Bank, Global Economic Prospects Reports.
3. World Trade Organization, World Trade Reports.
4. Organisation for Economic Co-operation and Development (OECD), Economic Outlook Reports.
5. Stockholm International Peace Research Institute (SIPRI), Military Expenditure Database.
6. Paul Krugman, International Economics: Theory and Policy.
7. Joseph E. Stiglitz, Globalization and Its Discontents.
8. Barry Eichengreen, Globalizing Capital.
9. भारत सरकार, आर्थिक सर्वेक्षण।
10. भारतीय रिज़र्व बैंक, वार्षिक प्रतिवेदन।

*****